

कथक रायगढ़ घराना की रचनाओं का सौन्दर्य

नृत्य में राष्ट्रीय शोध-संगोष्ठी

31 अक्टूबर-1 नवम्बर 2014

आयोजक

विजया राजे शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)

girlscollegemorar@rediffmail.com, Contact 0751-2368329

सहयोग

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मध्य क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल (म.प्र.)

संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ शासन, रायपुर (छ.ग.)

INDEX

• नृत्य

1. मेरे गुरु पी.डी. आशीर्वादम् और कथक का गढ़ रायगढ़	23
	प्रो. डॉ. माण्डवी सिंह
2. रायगढ़ घराने के कथक का कलात्मक सौन्दर्य	28
	डॉ. बी.डी. माणिक
3. रायगढ़ दरबार की कथक-परम्परा के जनक राजा चक्रधर सिंह	33
	श्रीमती यास्मिन सिंह
4. रायगढ़ के कथक में सम्वाद मूलकता	35
	अल्पना वाजपेयी
5. भारतीय नृत्य-शैलियों पर गीत गोविन्दम् का प्रभाव	38
	डॉ. सोनल शर्मा
6. शीर्षस्थ कलाकार और रायगढ़ दरबार	41
	डॉ. सुनीता भाले
7. राजा चक्रधर सिंह का कथक को सृजनात्मक योगदान	44
	डॉ. ज्योति बख्शी
8. रायगढ़ घराने की कथक रचनाओं में सौन्दर्य-बोध	47
	डॉ. मोनिका श्रीवास्तव
9. रायगढ़ दरबार के आधुनिक शिल्पी राजा चक्रधर सिंह	49
	डॉ. नीता गहरवार
10. प्रकृति की भाषा का घराना रायगढ़	51
	चित्रा शर्मा
11. रायगढ़ के अद्वितीय नृत्य गुरु पण्डित राम लाल	53
	प्रफुल्ल सिंह गहलोत
12. रायगढ़ कथक रचनाओं में मनोवैज्ञानिक चित्रण	55
	डॉ. मोनिका सिंह
13. रायगढ़ कथक के विकास में पण्डित जय लाल का योगदान	59
	डॉ. गीता शर्मा
14. कथक का मूल तत्त्व नृत्त	61
	डॉ. कमल वसिष्ठ
15. रायगढ़ के नृत्य में गत प्रयोग	64
	डॉ. राहुल स्वर्णकार
16. रायगढ़ घराने के नृत्तांग की विशेषताएँ।	66
	जितेश गढ़पायले

रायगढ़ दरबार की कथक-परम्परा के जनक राजा चक्रधर सिंह

श्रीमती यास्मिन सिंह

Abstract

संगीत सम्राट राजा चक्रधर सिंह को तीन बातों के लिए खासतौर पर जाना गया। पहला रायगढ़ दरबार को कथक के नए घराने के रूप में स्थापित करना, दूसरा तत्कालीन भारत के बड़े संगीतकारों को रायगढ़ में आमंत्रित करना और तीसरा देशभर में उस दौर में होने वाले संगीत की बड़ी सभाओं में दरबारी नर्तकों को भेजकर रायगढ़ में आकार ले रही परम्परा से परिचित कराना।

रायगढ़ घराने के कथक की अपनी विशेषताएँ हैं, जिस कथक ने इन्हें समझा-परखा और प्रस्तुत किया उसे कथक नृत्य जानने की कलात्मक दृष्टि प्राप्त हुई है। इतिहास और राजा भूपदेव सिंह – छत्तीसगढ़ में कथक नृत्य की परंपरा ठीक-ठीक कब शुरू हुई इस पर अधिकारिक रूप से कुछ कहना कठिन लगता है, लेकिन उपलब्ध प्रमाण और संदर्भों को जोड़कर देखें तो रायगढ़ दरबार की भूमिका इसमें अधिक नजर आती है। रायगढ़ दरबार का असली उत्कर्ष रायगढ़ का गणेश उत्सव है। राजा भूपदेव सिंह शास्त्रीय और लोक दोनों कलाओं को आश्रय दिया करते थे। छत्तीसगढ़ में गोंड़ राजाओं का आधिपत्य रहा है। महाराष्ट्र, हैदराबाद अथवा राजस्थान के शासकों की तरह छत्तीसगढ़ के शासक आर्थिक रूप से बेहद सामान्य थे। उनके रजवाड़े महल भी भव्य नहीं थे, बावजूद सीमित संसाधनों के भी यहाँ के राजा चक्रधर सिंह ने अपने छोटे से कार्यकाल में उपलब्धियों की वह नज़ीर पेश की जिसने कथक नृत्य के इतिहास में रायगढ़ को अविस्मरणीय रूप से दर्ज करवा दिया।

सन् 1890 के काल में रायगढ़ की राजगद्दी पर राजा भूपदेव सिंह आसीन थे जिन्होंने तत्कालीन भारत के अनेक दिग्गज कलाकारों को राज्याश्रय के तहत रायगढ़ में आमंत्रित किया था। प्रत्येक छोटे-बड़े कलाकारों के लिए आत्मीय अनुराग प्रदर्शित कर राजा भूपदेव सिंह उनकी कला का प्रदर्शन

रिसायत के हित में करवाते थे। यह उन्हीं का प्रताप था कि कलाकारों को रायगढ़ में मिलने वाले आदर सम्मान का आकर्षण खींच लाता था। राजा भूपदेव के दरबार में ठाकुर लक्ष्मण सिंह, बाबा ठाकुर दास जैसे संगीतकार स्थायी रूप से नियुक्त थे। इलाहाबाद की जानकी बाई, लखनऊ की गौहर जान एवं बिंदादिन महाराज की शिष्याएँ भी रायगढ़ आया-जाया करती थीं। ऐसे ही सांगीतिक वातावरण में राजा भूपदेव सिंह को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जो आगे चलकर पूरे देश में संगीत को प्रोत्साहन देने वाले प्रगतिशील राजा के रूप में ख्यात हुए।

संगीत सम्राट राजा चक्रधर सिंह को तीन बातों के लिए खासतौर पर जाना गया। पहला रायगढ़ दरबार को कथक के नए घराने के रूप में स्थापित करना, दूसरा तत्कालीन भारत के बड़े संगीतकारों को रायगढ़ में आमंत्रित करना और तीसरा देशभर में उस दौर में होने वाले संगीत की बड़ी सभाओं में दरबारी नर्तकों को भेजकर रायगढ़ में आकार ले रही परम्परा से परिचित कराना।

बीसवीं शताब्दी में – इस बात को भी ध्यान रखना होगा कि बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जब रजवाड़ों का वैभव बड़ी तेजी से सिमटने लगा था तब भी राजा चक्रधर सिंह दूसरे राजदरबारों से कलाकारों को आग्रह पूर्वक रायगढ़ में आमंत्रण देना नहीं भूलते थे, छोटे-छोटे राजदरबारों में रायगढ़ सम्भवतः इसलिए अग्रणी था कि कला और कलाकारों के प्रति वे पूरी तरह से उदार थे। उनकी इस उदारता के चर्चे अखिल भारतीय संगीत

सम्मेलनों के माध्यम से दूसरे रजवाड़ों और चोटी के कलाकारों तक फैल रहे थे। अब्दुल करीम खाँ, अलाउद्दीन खाँ, बड़े राम दास छन्नू मिश्रा, दिलीप चन्द्र बेदी, अब्बू खाँ, कृष्णराव शंकर पंडित, मनोहर बर्वे, पं. ओंकार नाथ ठाकुर आदि कलाकारों का स्नेह रायगढ़ को मिला। तत्कालीन नर्तकों में अच्छन महाराज, जयलाल, लच्छू महाराज, शम्भू महाराज, सीताराम महाराज, सुन्दर प्रसाद महाराज सोहन लाल एवं सुखदेव महाराज ने रायगढ़ में कथक की परम्परा को अपने अनुभव-ज्ञान के आधार पर समृद्ध किया।

राजा साहब का लोक-प्रेम – राजा सर्वगुण सम्पन्न थे। बेहद कम आयु में जीवन के सभी क्षेत्रों में उपलब्धियाँ हासिल कर ली थीं। लोक-शैली के प्रति भी उन्हें खास अनुराग था। राजमहल के भीतर पंतगबाजों, पहलवानों और मुर्गों की लड़ाई आदि तरह-तरह के करतब बाजों को बड़ा सम्मान दिया जाता था। ये करतबाज गणेश मेला में अपने हुनर से दर्शकों को आकर्षित करते थे। गणेश उत्सव के रूप में मनाए जाने वाला गणेश मेला संगीतकारों की खातिर तीर्थ बन जाता था। शायद कथक नृत्य देखना उसे पसंद करना और निरंतर इन कलाकारों के साथ संवाद करने का ही परिणाम था कि राजा चक्रधर सिंह पूर्णतः कथक के प्रति समर्पित होते चले गए। इस कलारूप की रक्षा करना, इसे विस्तार देना और इसकी श्रीवृद्धि करने की ललक का ही परिणाम कहें कि वह छत्तीसगढ़ के लोक-नर्तकों को कथक में पारंगत कर सके।

अपनी इस अदभुत कल्पना को साकार करने उन्होंने उन पाँच बालकों को चुना जो लोक-नृत्य में पूरी तरह पारंगत थे। ये थे कार्तिक राम, फिरतू महाराज, कल्याण दास, बर्मन लाल एवं अनुज राम। इनमें अनुज राम को छोड़कर शेष चारों इस विधा में पूरी तरह पारंगत हो गए और उस जमाने के चोटी के कथक नर्तकों में उन्हें गिना जाने लगा। इन सभी में कार्तिक राम जी अत्यधिक बहुमुखी थे। राजा साहब की सर्वाधिक बन्दिशें भी उन्होंने आत्मसात कीं। ये कलाकार जब सिद्धहस्त हुए तो राजा ने उन्हें भारत के बड़े संगीत समारोहों में रायगढ़ का प्रतिनिधित्व करने भेजा।

गुणग्राही राजा – राजा चक्रधर गुणग्राही तो थे, चीजों का संकलन करना और उन्हें नई पीढ़ी के लिए संयोजित करने में भी उन्हें विशेष आनंद आता था। संभवतः इसी वजह से संगीत के नये ग्रन्थों का निर्माण उन्होंने करवाया। ये ग्रंथ भारत में

घरानेदार संगीत और नृत्य की शास्त्रीय परम्परा को समझने का उत्तम उदाहरण बन सकते हैं। आज इन ग्रंथों की उपयोगिता पहले से अधिक है।

निर्माण विधि – राजा साहब नए बोल, तोड़े-टुकड़े अथवा परनों का निर्माण कर उन्हें नर्तकों को देते। नर्तक अपने अपने ढंग से भाव प्रदर्शन करते। राजा साहब स्वयं उसे तबले पर निकालते, जब सर्वानुमति होती तो उस रचना को पूरा मान लिया जाता। इसी दौरान जब चित्रकारों और कैलीग्राफी के जानकारों की टीम मुद्राओं का अंकन करती। जिस कवि का श्लोक तथा चित्रकार का चित्र सबसे अच्छा होता उसे अंतिम रूप दे कर लेखन कक्ष में भेज दिया जाता था। पैलेस मैनेजर श्याम लाल जिन्होंने मोतीमहल के पहले तल्ले में लेखन कक्ष का चयन किया था वे अपनी निगरानी में उसे चिंतामणि कश्यप नामक कैलीग्राफी से लिखवाते। इनके दो सहायक और थे जिनके नाम जगदीश प्रसाद थावाईत और लोकनाथ पुरोहित थे। लेखन कक्ष में राजा साहब को छोड़ किसी और को प्रवेश की अनुमति नहीं थी। लेखकों से बाहर का कोई भी व्यक्ति बात नहीं कर सकता था। ये लेखक अंतिम रूप दी गई और राजा साहब द्वारा टिक की गई रचनाओं को स्वान ब्लू ब्लैक इंक से ग्रन्थ निर्माण के लिए लाए गए स्पेशल पेपर्स पर लिपिबद्ध करते। कहते हैं इसकी लेखनी की सफाई और सुडोलता के सामने ब्रिटिश एम्पायर की मुद्रण व्यवस्था भी फेल थी।

इन ग्रन्थों के जरिये राजा चक्रधर कथक को समृद्ध करने की कोशिश कर रहे थे ताकि आने वाली पीढ़ी उन्हें अपनाकर कथक को और अधिक उष्मा और ऊर्जा दे सके। यह बात जरूर चौंकाती है कि आज इनमें से कोई भी ग्रन्थ बाहर नज़र नहीं आता। ग्रन्थ हैं या नहीं, इस बात की चर्चा भी संगीत जगत् में होती है। यह तथ्य भी सवाल खड़े करता है कि मानस मर्मज्ञ दीवान डॉ. बल्देव प्रसाद मिश्र के होते हुए इन अमूल्य संगीत ग्रन्थों के प्रकाशन की दिशा में उस समय कोई प्रयास क्यों नहीं हो पाया।

D-1/20, गवर्नमेंट ऑफीसर्स कॉलानी,
देवेन्द्र नगर, रायपुर, छ.ग.492001
9755038387, singh.yasmin1@gmail.com